प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

गरीबी कम करने, सतत विकास को बढ़ावा देने और सुशासन के लिए लैंगिक समानता एक पूर्व शर्त है...
...कोफी अन्नान, *संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव*

करीब ढाई दशक की आपसी कटुता भुलाकर मुलायम सिंह यादव और मायावती ने मैनपुरी में मंच साझा कर यही साबित किया है कि राजनीति में कोई स्थायी शत्रु नहीं होता। हालांकि लोकसभा चुनाव में महागठबंधन की परीक्षा होना अभी शेष है।

चौबीस साल बाद

दो धुर विरोधियों, पूर्व मुख्यमंत्रियों और उत्तर प्रदेश की राजनीति में प्रतिद्वंद्वियों-मुलायम सिंह यादव और मायावती को लगभग चौबीस साल के बाद मैनपुरी में महागठबंधन की एक रैली में मंच साझा करते हुए देखना न केवल चकित करने वाला था, बल्कि इससे फिर यही साबित हुआ कि राजनीति में कोई स्थायी शत्रु नहीं होता। मुलायम सिंह मैनपुरी से उम्मीदवार हैं, जहां तीसरे चरण में चुनाव होने वाला है और चूंकि सपा, बसपा और रालोद का गठबंधन है, इसलिए मायावती उनके लिए प्रचार करने आई थीं। मुलायम सिंह ने जहां प्रचार करने के लिए आने पर मायावती का आभार जताया, वहीं मायावती ने मुलायम सिंह यादव को पिछड़ों का असली नेता बताते हुए उन्हें विजयी बनाने की अपील की। गेस्ट हाउस कांड के बाद पिछले चौबीस साल से सूबे के जो दो नेता प्रायः एक दूसरे की तीखी आलोचना करते थे, उनका एक मंच पर होना और एक दूसरे को सम्मान देना सुखद था, भले उसके पीछे राजनीतिक अवसरवाद ही क्यों न हो। मैनपुरी की यह रैली इन दोनों के साथ मंच पर होने के कारण ही महत्वपूर्ण नहीं थी, बल्कि सूबे में महागठबंधन को स्वीकार्यता दिलाने के लिहाज से भी इस रैली का महत्व है। दरअसल सपा का नेतृत्व अखिलेश के पास आने के बाद उन्होंने भाजपा के खिलाफ बसपा के साथ गठबंधन के साहसी प्रयोग की पहल की, जो लोकसभा के उपचुनावों में कामयाब रही। सपा और बसपा का व्यापक जातिगत आधार ही नहीं, उत्तर प्रदेश में उनका व्यापक नेटवर्क भी प्रतिद्वंद्वियों के लिए चुनौती है, बावजूद इसके कि हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश में भाजपा ने भी व्यापक पैठ बनाई है। हालांकि लोकसभा चुनाव में इस महागठबंधन की परीक्षा होना अभी शेष है। फिर यह भी नहीं भूल सकते कि सूबे की राजनीति में एक दूसरे की प्रतिद्वंद्वी ये पार्टियां लोकसभा चुनाव में भाजपा को हराने के एजेंडे पर ही एक साथ आई हैं। कुछ साल पहले ठीक इसी तरह बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा को रोकने के लिए वहां की दो प्रतिद्वंद्वी पार्टियों राजद और जदयू को हमने साथ आते देखा था, लेकिन उन्हें अलग होने में भी ज्यादा देर नहीं लगी। लिहाजा महागठबंधन और उसमें सपा और बसपा का यह रिश्ता तो इस चुनाव में उम्मीदों के अनुरूप सफलता पर ही निर्भर करेगा।

मस्जिद में महिलाओं का प्रवेश?

अनेक लोगों का मानना है कि मस्जिदों में महिलाओं को नमाज पढ़ने की इजाजत देना उन्हें समान अधिकार देना है। लेकिन जब मस्जिद में भी उन्हें पुरुषों की निगाह बचाकर ही नमाज पढ़नी होगी, तो यह आखिर किस तरह का समानाधिकार होगा?

तस्लीमा नसरीन
चर्चित लेखिका

भारत में जो लोग खुद को उदारवादी और धर्मनिरपेक्ष कहते हैं, वे अल्पसंख्यक मुस्लिमों के तमाम रीति-रिवाजों-मदरसा, मस्जिद, ईद, मुहर्रम, हिजाब, बुर्का, और यहां तक कि नारी विरोधी शरिया कानून का भी समर्थन करते हैं। ये उदारवादी बुद्धिजीवी हिंदू महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ते हैं, लेकिन मुस्लिम महिलाओं के समान अधिकार के लिए कभी चिंतित नहीं होते। इन लोगों की सोच है कि मुसलमान जो कुछ भी मांग कर रहे हैं, वह उन्हें मिलना चाहिए। यहां मुस्लिमों से तात्पर्य सिर्फ मुस्लिम पुरुषों से है। वे धार्मिक कानून चाहते हैं, इसलिए यह उन्हें मिलना चाहिए। चूंकि वे मुस्लिम महिलाओं को किसी किस्म की आजादी नहीं देना चाहते, इसलिए महिलाओं को आजादी न देना ही इस्लाम सम्मत है। भारत के उदारवादी वामपंथी इसी तरह अल्पसंख्यक मुसलमानों के पक्ष में खड़े होने के नाम पर लंबे समय से मानवाधिकार हनन का ही काम करते आ रहे हैं। इसके बावजूद वे दावा करते हैं कि वे मानवाधिकार और महिलाओं को समान अधिकार देने के पक्ष में हैं। भारत में तीन तलाक के खिलाफ बने माहौल से कट्टरवादी हिंदू खुश हैं, लेकिन उदारवादी खुश नहीं हैं।

सभी तरह की आजादी और अधिकार से वंचित मुस्लिम महिलाओं के लिए आज अचानक समान अधिकार की बात हो रही है। पुणे के एक शिक्षित मुस्लिम दंपति ने मुस्लिम महिलाओं को भी पुरुषों की तरह मस्जिद में नमाज पढ़ने की इजाजत देने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका डाली है। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, राष्ट्रीय महिला आयोग और सेंट्रल वक्फ काउंसिल को नोटिस जारी करते हुए पूछा है कि केंद्र सरकार की इसमें क्या भूमिका है।

तर्क यह दिया जा रहा है कि सर्वोच्च न्यायालय ने सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को प्रवेश देने के पक्ष में फैसला दिया है, ऐसे ही मुस्लिमों की इबादतगाह में महिलाओं को प्रवेश क्यों नहीं मिलना चाहिए?

तीन तलाक को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा असांविधानिक ठहरा देने पर पूरे भारत में खुशी की लहर दौड़ गई। जैसे मुस्लिम महिलाओं की तमाम समस्याओं का समाधान हो चुका है। इससे पता चलता है कि लोगों को इस्लामी कानूनों के बारे में कितनी कम जानकारी है। तीन तलाक को अदालत द्वारा असांविधानिक ठहरा देने के बावजूद मुस्लिम महिलाओं को आज तक समानाधिकार नहीं मिला है। मेरा प्रश्न यह है कि मस्जिदों में नमाज पढ़ने का अधिकार मिलने से मुस्लिम महिलाओं को क्या लाभ होगा। होगा यह कि वे मस्जिद में एक साथ कतार में खड़ी होकर सजदा करेंगी। यह अधिकार उन्हें नहीं मिला है, जो अब मिलेगा। फर्क इतना आएगा कि घर में नमाज पढ़ने वाली महिलाएं अब मस्जिद में नमाज पढ़ सकेंगी। लेकिन उन्हें पुरुषों के साथ कतार में नमाज पढ़ने नहीं दिया जाएगा। वे दीवार या पर्दे की आड़ से नमाज पढ़ेंगी, या उनके नमाज पढ़ने के लिए कोई ऐसी जगह निकाली जाएगी, जहां वे पुरुषों की निगाहों में न आएं। इस्लाम के नबी ने हालांकि कहा है कि महिलाओं के लिए घर में नमाज पढ़ना ही अच्छा है। धर्मप्राण मुस्लिम महिलाएं नबी के उपदेश का उल्लंघन कर मस्जिदों में नमाज पढ़ने जाएंगी, यह विश्वास करना मेरे लिए कठिन है। हालांकि अनेक लोगों का मानना है कि मस्जिदों में महिलाओं को नमाज पढ़ने की इजाजत देना उन्हें समान अधिकार देना है। लेकिन जब मस्जिद में भी उन्हें पुरुषों की निगाह बचाकर ही नमाज पढ़नी होगी, तो यह आखिर किस तरह का समानाधिकार है? महिलाओं का इमाम बनना, उनका मस्जिदों में पुरुषों के साथ या पुरुषों के पीछे खड़े होकर नमाज पढ़ना हराम है। यह समझने की बात है कि धर्म के अंदर रहकर समानाधिकार की मांग नहीं की जा सकती, इसके लिए धर्म के दायरे से बाहर निकलना जरूरी है। मुस्लिम लड़कियां क्या शादी, तलाक और उत्तराधिकार के मामले में समान अधिकार की मांग कर सकेंगी? इस्लाम में आस्था रखने पर इस्लाम में स्त्री-पुरुषों में व्याप्त विषमता पर भी विश्वास करना होगा।

कितनी मुस्लिम लड़कियां स्कूल, कॉलेज की शिक्षा खत्म कर अपनी इच्छा से विश्वविद्यालयों में आगे की पढ़ाई के लिए जाती हैं? कितनी मुस्लिम लड़कियां आधुनिक लड़कियों की तरह नौकरी करती या खुद का कारोबार शुरू करती हैं? कितनी मुस्लिम महिलाओं को हिजाब या बुर्का न पहनने की आजादी मिली है? कितनी मुस्लिम महिलाएं वास्तव में अपने फैसले खुद लेने के लिए स्वतंत्र हैं? ऐसी लड़कियों-महिलाओं की संख्या निश्चय ही बहुत कम होगी।

मस्जिदों में नमाज पढ़ने का अधिकार न मिलने से महिलाओं का कोई नुकसान नहीं हुआ है। मुस्लिम महिलाओं को नुकसान तो उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्व न मिलने और आजाद न हो पाने के कारण हुआ है। धार्मिक कानून में अधिकार कम मिलने या न मिलने से उनका नुकसान हुआ है। कम उम्र में शादी, बलात्कारियों के साथ निकाह करने की मजबूरी, मोबाइल इस्तेमाल न करने देने समेत उनके खिलाफ ऐसे सैकड़ों फतवों से उनका नुकसान हुआ है। भारत के उदारवादी हिंदू समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को दूर करने वाले राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे मनीषियों पर तो गर्व करते हैं, लेकिन वे नहीं चाहते कि मुस्लिम समाज की कुप्रथाओं को दूर करने के लिए मुस्लिमों के बीच से वैसे ही व्यक्तित्व सामने आएं।

मुस्लिम महिलाओं के लिए स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में जाना, स्वावलंबी होना, रीढ़ की हड्डी सीधी करके चलना मस्जिद जाने से ज्यादा जरूरी है। मैं जब मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता की बात करती हूं, मुस्लिम पुरुषों से प्रगतिशील और उदारवादी होने की बात करती हूं, तब भारत के कुछ उदारवादी-जो खुद को मुस्लिमों का हितचिंतक बताते हैं-मुझे मुस्लिम विरोधी बताते हैं। इसी से पता चलता है कि वे चाहते क्या हैं। वे चाहते हैं कि मुसलमान अंधेरे में पड़े रहें। मुसलमानों के विरोधी भी यही चाहते हैं। सती प्रथा खत्म करने के समय भी भारत के अनेक इलाकों से उसके विरोध में आवाजें उठी थीं कि इसका समय अभी नहीं आया है। याद रखना चाहिए कि समय कभी आता नहीं है, हमें खुद उसके लिए पहल करनी पड़ती है।

बेडरूम को प्रयोगशाला बनाने का लाभ मिला

अपनी कहानी
>> गगनदीप कांग

फेलो ऑफ रॉयल सोसाइटी के रूप में चयन मेरे लिए तो खुशी की बात है ही, यह भारतीय प्रयोगशालाओं में किए जा रहे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधानों की अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति भी है।

विज्ञान के प्रति मुझे बचपन से ही दिलचस्पी थी। मेरे पिता रेलवे में काम करते थे और मैं एक छोटे से शहर में पली-बढ़ी, जहां मित्रों का समूह बहुत सीमित था और सप्ताहांत में करने के लिए कुछ खास नहीं होता था। सो हमने फैसला किया कि खेलने और मजे करने के लिए हम एक प्रयोगशाला स्थापित करेंगे और उसमें प्रयोग किया करेंगे। चूंकि मेरे पिता इंजीनियर थे, इसलिए प्रयोगशाला में हम ज्यादातर भौतिकी और रसायन विज्ञान से संबंधित प्रयोग करते थे। जहां भी हम गए, हमने अपने एक बेडरूम को अपनी प्रयोगशाला बनाया और जो भी हम पढ़ते थे, उससे संबंधित प्रयोग करते थे। वह वाकई मजेदार होता था!

अनुसंधान को दी तरजीह

यह तो मुझे पता था कि मैं विज्ञान के क्षेत्र में ही कुछ करूंगी, लेकिन बाद में मैंने मेडिसिन के क्षेत्र में जाने का फैसला किया। जब मैंने मेडिसिन की पढ़ाई की और पोस्ट-डॉक्टरेट का प्रशिक्षण ले रही थी, तो मुझे लगा कि एक समय में एक मरीज को देखना पर्याप्त नहीं होगा। मैं अनुसंधान के क्षेत्र में जाना चाहती थी, जहां आप उन चीजों को करने के बारे में सोच सकते हैं, जो व्यक्तिगत चिकित्सा के अभ्यास की तुलना में सिद्धांत पर अधिक आधारित हैं।

रोटावायरस और टाइफाइड वैक्सीन का विकास

मेरा सबसे रोमांचक शोध रोटावायरस और टाइफाइड के वैक्सीन का विकास है। मैं इस समय संक्रमण, आंत के कार्य और शारीरिक व संज्ञानात्मक विकास के बीच के जटिल संबंधों की जांच कर रही हूं और भारत में एक मजबूत प्रतिरक्षा अनुसंधान का नेटवर्क तैयार करना चाहती हूं। शोध कार्य मुझे इसलिए रोमांचक लगता है कि बिना परिणाम के बारे में सोचे हम उस पर काफी समय और श्रम खर्च करते हैं और जब सफलता मिलती है, तो बहुत खुशी होती है।

दो महिलाएं हैं मेरी रोल मॉडल

मेरी पहली रोल मॉडल महिला एक वैज्ञानिक हैं-मैरी ईस्ट्स, जिनके सान्निध्य में मैंने पोस्ट डॉक्टरेट किया। वह अमेरिका के बॉयलर कॉलेज ऑफ मेडिसिन में मोलेक्यूलर वायरोलॉजिस्ट हैं और उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। इस क्षेत्र के सभी लोग उनका काफी सम्मान करते हैं। मुझे लगता है, उनके साथ मैंने जो समय बिताया, उसने मेरे जीवन को बदल दिया। मेरी दूसरी रोल मॉडल मेरी मां हैं। उन्होंने मेरे लिए कई ऐसे काम किए, जो मेरे पिता को करने पड़ते।

स्त्रियों में क्षमता है, बस समर्थन चाहिए

मुझे नहीं लगता कि हमारे देश की महिलाओं में क्षमता की कमी है। बस उन्हें थोड़े समर्थन की जरूरत है। मुझे लगता है कि जो संस्थाएं महिलाओं को अपने बच्चों की देखभाल करने की अनुमति देती हैं, वे लचीली होती हैं। कार्य स्थल पर उन्हें सहायता प्रदान करना बहुत महत्वपूर्ण है। दरअसल हमारे समाज में कई तरह की सांस्कृतिक बाधाएं हैं। इसके अलावा ढांचागत बाधाएं भी हैं, जैसे अवकाश मिलने में मुश्किल, सुविधाओं की कमी और कार्य संस्कृति में लचीलेपन की कमी। इन सब बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता है। हमारे देश में पहले की अपेक्षा महिलाओं के लिए स्थिति बेहतर हुई है। बेशक अब भी देश में आदर्श स्थिति नहीं है, लेकिन हालात सुधर रहे हैं।

-रॉयल सोसाइटी की फेलो बनने वाली भारतीय मूल की पहली महिला के साक्षात्कारों पर आधारित

फैक्ट फाइल

नात्रो दाम

>> नात्रो दाम कैथेड्रल का आंतरिक हिस्सा

वर्ष 1831 में विक्टर ह्यूगो ने एक उपन्यास लिखकर इसे एक अलग पहचान दी।

नात्रो दाम पेरिस में स्थित मध्य युगीन कैथोलिक कैथेड्रल (गिरजाघर) है। भीषण आग लगने की वजह से इसे हाल ही में काफी नुकसान पहुंचा है। इसका पूरा नाम नात्रो दाम दे पेरिस यानी अवर लेडी ऑफ पेरिस है। यह कैथेड्रल वर्जिन मैरी को समर्पित है और यह फ्रैंच गोथिक वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। बिशप मौरिस द सुले के समय 1160 में इसका निर्माण शुरू हुआ था और 1260 तक इसका बड़ा हिस्सा बनकर तैयार हो सका। बाद की सदियों में इसमें बदलाव होते रहे। 1790 में फ्रांसीसी क्रांति के समय इसकी पवित्रता को नुकसान पहुंचा था। 1804 में नेपोलियन-1 की फ्रांस के सम्राट के रूप में यहीं ताजपोशी की गई थी। यही नहीं, 1810 में यह नेपोलियन और ऑस्ट्रिया की मेरी लुईस के विवाह का गवाह भी बना। फ्रैंच गणराज्य के अनेक राष्ट्रपतियों के निधन के बाद उनके अंतिम संस्कार भी यहां किए गए हैं। यह माना जाता है कि फ्रांस में ईसाइयत के आने से पहले इस जगह पर बृहस्पति को समर्पित एक गालो रोमन मंदिर स्थित था। नात्रो दाम पेरिस की एक महान विरासत तो है ही, दुनिया भर से पर्यटक इसे देखने आते हैं। 1831 में विक्टर ह्यूगो ने एक उपन्यास लिखकर इसे एक अलग पहचान दी। *द हंचबैक ऑफ नात्रो दाम* नामक यह उपन्यास आज भी बेस्ट सेलर किताबों में शुमार है। इसकी कहानी नात्रो दाम के एक कुबड़े और एक जिप्सी लड़की के प्रेम पर केंद्रित है। यह उपन्यास ऐसे समय आया था, जब नात्रो दाम उपेक्षित पड़ा हुआ था।

ट्रंप के रास्ते पर टेरी गोउ

अपने कारोबारी दोस्त ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद अब टेरी गोउ भी ताइवान के चुनाव में खड़े हो रहे हैं।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए क्रिस हॉर्टन

ताइवान के अरबपति टेरी गोउ ने, जिनकी कंपनी आईफोन बनाने के लिए जानी जाती है, पिछले बुधवार को एलान किया कि वह राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रहे हैं। गोउ का यह भी कहना है कि अपने इस अभियान में उन्हें चीन की देवी का आशीर्वाद मिला है। गोउ के चुनाव लड़ने के फैसले से ताइवान की राजनीति में उथल-पुथल मच गई है, क्योंकि इस स्वशासित द्वीप के चीन से तनाव भरे रिश्ते हैं, जबकि गोउ की कंपनी फॉक्सकॉन ने चीन में भारी निवेश कर रखा है।

बुधवार की सुबह उन्होंने ताइपेई में माजू देवी के मंदिर में पूजा-अर्चना की। ऐसा विश्वास है कि माजू देवी समुद्र से गुजरने वालों की रक्षा करती हैं। गोउ ने वहां मौजूद संवाददाताओं से कहा कि माजू देवी ने उन्हें सपने में दर्शन दिए और अर्थव्यवस्था की हालत सुधारने तथा चीन के साथ बेहतर रिश्ता बनाने के लिए राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए कहा। उन्होंने युवाओं का ध्यान रखने और संघर्ष कर रहे लोगों की मदद करने का भरोसा दिलाया।

पर गोउ खुद संघर्ष नहीं कर रहे। वर्ष 1974 में उन्होंने फॉक्सकॉन की स्थापना की और धीरे-धीरे उन्होंने इसे दुनिया की एक बड़ी कंपनी बना दिया, जिसमें आज दस लाख से भी अधिक कर्मचारी हैं। अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों की तरह गोउ के पास राजनीतिक अनुभव नहीं है। लेकिन उनकी व्यक्तिगत संपत्ति, जो कि फोर्ब्स के मुताबिक सात अरब डॉलर से भी अधिक है, चुनाव अभियान में उनकी बहुत मददगार साबित होगी। ताइवान की सुस्त आर्थिक विकास दर, रोजगार की कठिन स्थिति और कामगार वर्ग की मुश्किलें इस चुनाव के मुख्य मुद्दे हैं। लेकिन चीन से रिश्ता भी इस चुनाव का एक मुद्दा होगा। दरअसल 2016 में डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के साइ इंग वेन के राष्ट्रपति बनने के बाद चीन से ताइवान के रिश्ते ज्यादा तनावपूर्ण हो गए। गोउ चीन से दोस्ताना रिश्ता रखने वाली विपक्षी कुओमिन्तंग पार्टी से चुनाव लड़ना चाहेंगे।

गोउ पिछले काफी समय से राष्ट्रपति का चुनाव लड़ना चाहते थे। लेकिन 2016 में अमेरिका में अपने कॉरपोरेट मित्र डोनाल्ड ट्रंप के चुनाव जीतने के बाद उनमें यह इच्छा और मजबूत हो गई। 2017 में उनकी कंपनी फॉक्सकॉन ने अमेरिका के विस्कॉन्सिन में अरबों डॉलर का निवेश किया। तब ट्रंप ने व्हाइट हाउस में आमंत्रित कर उनका सम्मान करते हुए कहा था कि गोउ हमारे समय के महान कारोबारियों में से हैं। जाहिर है कि अपने चुनाव अभियान में गोउ को ट्रंप की मदद मिलेगी।

गौरतलब है कि व्हाइट हाउस में अबाध प्रवेश के अलावा चीन के शीर्ष नेतृत्व से भी गोउ के दोस्ताना संबंध हैं। हालांकि विपक्षी कुओमिन्तंग पार्टी से राष्ट्रपति पद के लिए और भी कई दावेदार हैं। लेकिन चूंकि अमेरिका और चीन से ताइवान के आधिकारिक रिश्ते नहीं हैं, ऐसे में अमेरिका और चीन के शीर्ष नेतृत्व से गाढ़ी दोस्ती के कारण भी गोउ कुओमिन्तंग पार्टी के सबसे ताकतवर उम्मीदवार साबित हो सकते हैं।

इस हफ्ते के शब्द

काकोली घोष

संघ लोकसेवा आयोग ने लेटरल प्रवेश के जरिये जिन नौ लोगों को संयुक्त सचिव पद के लिए चुना है, उनमें कृषि विशेषज्ञ काकोली घोष अकेली महिला हैं।

डिसेबल्ड (DISABLED)

सिडनी लॉर्ड के मेयर क्लोवर मूरे ने लोगों को सलाह दी है कि 'डिसेबल्ड' शब्द के बजाय दिव्यांगों को 'एक्सेस इनक्लूजन सीकर्स' कहा जाना चाहिए।

पॉप बैंड का जलवा

10 करोड़

लोगों द्वारा सबसे कम वक्त में यूट्यूब पर देखा जाने वाला बैंड बन गया है दक्षिण कोरियाई पॉप बैंड ब्लैकपिंक।

सूत्र
>> रॉबर्ट कियोसाकी

जीवन के अनुभव पर लिखी किताब ने दिलाई सफलता

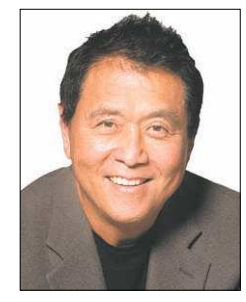

मेरा जन्म हवाई में हुआ और मैं वहीं पला-बढ़ा। मेरा जीवन औसत किस्म का था। 1965 में ग्रेजुएशन करने के तुरंत बाद मैंने अमेरिका के मर्चेंट मैरीन एकेडमी में दाखिला ले लिया। वर्ष 1972 में वियतनाम युद्ध के दौरान मैंने हेलिकॉप्टर गनशिप पायलट के रूप में नौसेना में काम किया, जिसके लिए मुझे अवार्ड मिला। 1974 में मुझे सम्मान के साथ सेना से छुट्टी दी गई। उसके बाद चार साल तक मैंने सेल्समैन के रूप में फोटोकॉपी की मशीनें बेचीं। फिर मैंने खुद का कारोबार शुरू किया और खुदरा व्यापार में हाथ आजमाया, जिसमें थोड़ा बहुत सफल रहा, लेकिन जल्द ही मेरी कंपनी दिवालिया हो गई। फिर मैंने एक दूसरी कंपनी शुरू की, जो पांच वर्ष तक चली। दिवालिया होने के बाद मैंने लगभग सब कुछ खो दिया। एक ऐसा भी वक्त आया, जब मैं बेघर हो गया था। महीनों तक मैं अपनी टोयोटा कार में रहा। फिर मैंने 1985 में एक एजुकेशन कंपनी शुरू की। उस कंपनी का उद्देश्य छात्रों को यह बताना था कि वे कैसे समझदारी से अपने पैसे का निवेश करें। *रिच डैड पूअर डैड* के प्रकाशित होते ही मैं एक सफल लेखक के तौर पर चर्चित हो गया। यह दुनिया भर में बेस्टसेलिंग किताब साबित हुई। यह किताब दरअसल मेरे जीवन के अनुभवों पर आधारित है। मेरे पिता पढ़े-लिखे थे और एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे, पर अपनी आमदनी का सही तरीके से प्रबंधन नहीं कर पाते थे। दूसरी ओर मेरे मित्र माइक के पिता थे, जो कम पढ़े-लिखे थे, पर बेहतर वित्तीय प्रबंधन के कारण उनकी गिनती अमीरों में होती थी। अपनी पुस्तक में मैंने बताया है कि गरीब और मध्यवर्ग के लोग पैसे के लिए काम करते हैं, जबकि अमीर व्यक्ति का पैसा उनके लिए काम करता है। गरीब आदमी पैसा कमाने के लिए मेहनत को प्राथमिकता देते हैं और इसीलिए उनके अंदर असुरक्षा की भावना होती है, जबकि अमीर आदमी काम सीखने की इच्छा से काम करते हैं और काम सीखने के बाद पैसा स्वयं उनके पास आता है। इस किताब की सफलता के बाद मैंने 'कैशफ्लो 101' तैयार किया, जो एक शैक्षणिक गेम है। यह गेम लोगों को सटीक वित्तीय एवं निवेश रणनीति की शिक्षा देता है। सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप किस पृष्ठभूमि से आए हैं, बस इसके लिए दृढ़ संकल्प, अनुशासन, कड़ी मेहनत और पीछे न हटने का जुनून होना चाहिए। अगर आपमें ये गुण हैं, तो आपके सपने को साकार होने से कोई रोक नहीं सकता।

सफलता के लिए दृढ़ संकल्प, अनुशासन, कड़ी मेहनत और पीछे न हटने का जुनून होना चाहिए।